eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर का मानवीय चिंतन और शिक्षा

[1]श्रीमती निधि राजौरिया
[1]शोधार्थी, जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

शब्द संत साहित्य ऐसी निर्मल धारा है जिसमें गोते लगाकर हम मानवीय मूल्यों की रक्षा कर चहुंओर शीतलता और स्वच्छता को प्रसूत कर सकते है। हम अपनी महान परंपरा और संस्कृति के संतरूपी पुरखों से बहुत कुछ गृहण कर उस धरती की रक्षा कर पायेगें। जिसमें मानवीयता पल्लवित और पुष्पित होती है। संत कबीर भक्ति आंदोलन से उपजे ऐसे संत है। जिन्होनें अध्यात्म के साथ मानवीय अस्मिता एवं उसके मूल्यों का परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराया।

बीज शब्द – संचार, चिंतक, संवाद, धर्म, सांप्रदायिकता, सद्भावना, मानवीय चिंतन।

Introduction

आदिकाल से ही भारत विचारको ऋषि मुनियों, संतो और मनीषियों की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि रही है। यह भारत का सौभाग्य रहा है कि विशाल भौगौलिक और सांस्कृतिक फलक के चलते भारत को इन महापुरूषों का सानिध्य निरंतर प्राप्त होता रहा है। ऐसे ही एक महान संत हुए है– संत कबीर दास जी कबीर जी की पहचान केवल एक संत अथवा महात्मा के रूप में नही होती बल्कि क्रान्तिकारी, कवि, दार्शनिक, समाज, सुधारक, मानवीय चिंतक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना जागृति के अग्रदूत के रूप में भी जाना जाता है। संत कबीर की वाणी को हिंदी साहित्य तथा गुरूग्रंथ साहिब में विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है।

आज इस आधुनिक काल में सांस्कृतिक अतिक्रमण एवं विविध द्वद्वों और मानव मूल्यों में ह्रास दिनों दिन हो रहा है। मानव सभ्यता गर्त में जा रही है। इस सभ्यता को बचाने के लिए अनिवार्य हो गया है कि हमारे विविध तपस्वी एवं मनस्वी संतो की वाणी का चिंतन मनन करके आत्मसात किया जाये और समाज को पुनर्जीवित किया जाये। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को निरंतर विकासोन्मुख और अक्षुण्ण बनाए रखने एवं मानवमूल्यों को पोषित करने में विभिन्न काल और संतो का विशेष योगदान रहा है। कबीर की वाणी प्रत्येक काल में उपादेय एवं प्रेरणास्पद रही है। मानवीय मूल्यों की दृष्टि से समाज खोखलेपन का शिकार होता जा रहा है। भौतिक क्षेत्र में तमाम उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु होड़ मची है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक विसंगतियां व्याप्त है मनुष्य विविध अवरोधों मानसिक त्रास से ग्रस्त हो गया है, वह समाज में रहकर भी समाज से विलगाव को महसूस कर रहा है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए भयाभय दुष्परिणाम की ओर इंगित कर रहा है। इन विसंगतियों से उबरने लिए और मानव मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से संत कबीर की वाणी का अध्ययन ही सकारात्मक पहलू का स्त्रोत है जिससे ऊर्जा गृहण कर हम समाज में इनके उदात्त विचारों को प्रस्तुत कर सके। मानव मूल्यों को संपोषित करने एवं उसमें प्राण ऊर्जा भरने का कार्य

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

अगर कोई कर सकता है तो वह संत है उनका साहित्य मानव मूल्यों को संपोषित करता है। संत कबीर आजीवन अपनी अध्यात्मिक चेतना के साथ सामाजिक विद्रूपताओं पर निशाना साधा और मानव मूल्यों कफ्री स्थापना हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहे।

जब हम समाज में मानव मूल्य की बात करते है तब आवश्यक हो जाता है कि समाज और मानव मूल्य के सम्बन्धों को सही अर्थों में समझा जायें। समाज में समाज द्वारा निर्मित कुछ मानक तथा मूल्य स्वीकृत होते है जिनमें मानवता के कल्याण हेतु चिंतन होता है। वही दूसरी तरफ समाज के कुछ ऐसे विचार या अवधारणाऐं होती है जिससे समाज में विकृति आती है। अतः एक स्वस्थ और सुंदर समाज के लिए यह आवश्यक होता है कि जिन तत्वों से समाज में विकृति विसंगाति उत्पन्न हो उनका निषेध किया जाये और जिन तत्वों से समाज में उदात्तता और मानवीय मूल्यों के बोध का जागरण हो। संत आज के समाज में सूर्य के सदृश जन–जीवन में ऊर्जा भर रहे है। इन संतो ने अपने वाणी और अभंगो से भारतीय साहित्य को समृद्ध करने के साथ मानवीय गरिमा को जो ऊँचाई प्रदान की है वह अतुलनीय है।

इन्होनें मानव सभ्यता को ऐसा बीज प्रदान किया है। जिसके पल्लवन से संपूर्ण संसार लह लहायेगा, सन्मार्ग एवं शान्ति की और उन्मुख होगा। हमारी धरती कभी भी संतो से खाली नही है। वह प्रत्येक काल में रहे है। उनके सशरीर न होने पर थी उनके विचार, वाणी एवं साहित्य धरोहर के रूप में हमें प्राप्त है ''डॉ0 बलदेव वशी लिखते है, ''आज समूचे विश्व को केवल संत ही बचा सकते है। पर्यावरण हो जातिवाद, नस्लवाद, संप्रदायवाद हो, आर्थिक, शोषण और गैर बराबरी हो, सब प्रकार के विशेष अमानवीयता हत्या–हिंसा सें संत निजात दिला सकते है।

कालजयी कबीर के संदेश में मानवता की चिरंतर निधि है। समाज के आज सांस्कृतिक शून्यता है। इस शून्यता की खोज कबीर के मूल्यवादी और मानववादी दृष्टिकोण में निहित है। कबीर का चिंतन आज भी भारतीय समाज के जनजीवन के अंतर्गत व्याप्त है। कबीर द्वारा स्थापित उच्च और श्रेष्ठ जीवनमूल्य समाज के लिये मानक है कबीर के कालजयी विचार सदियों से सहज ही भारतीय जनमानस में संचारित होते रहे है। कबीर ने किसी भी तरह की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, किन्तु उनकी वाणियाँ इतनी सहज, श्रेष्ठ और सारगर्भित भी कि वह आज भी भारतीय समाज के लिये मानवीय और अनुकरणीय है।

कबीर जी के द्वारा रचित साहित्य में गुरू और शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। कबीर जी ने गुरू के मार्गदर्शन और सम्यक ज्ञान को मानव जीवन के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है क्योंकि गुरू और उचित शिक्षा के बिना मानव अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति नही कर सकता शिक्षा एक प्रक्रिया है जो गुरू–शिष्य सम्बन्धों के आधार पर निष्पादित की जाती है।

शिक्षा –

शिक्षा जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह हमें उपयोगी कौशल, ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करने में मदद करके व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर हमारे जीवन को बेहतर बनाने में मदद करती है। यह एक अच्छा करियर विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है जिससे हमारे जीवन की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

गुणवत्ता में वृद्धि होती है, यह किसी के आत्मविश्वास के साथ–साथ समग्र कल्याण को विकसित करने में सहायक है शिक्षा मानव के विकास और प्रगति लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह हमारे समाज में विवेक ज्ञान, समझ और समर्पण की भावना को विकसित करती है। शिक्षा मानवीय सम्पदा को वृद्धि देती है, और सभी क्षेत्रों में समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। कबीर जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। उनकी शिक्षा दृष्टि में अन्तकरण से साक्षात्कार कराने वाली अध्यात्मिक पक्ष की अवहेलना करने से ही मानव जाति समस्याओं से जूझ रही है। केवल पुस्तक आधारित शिक्षा को कबीर जी ने वास्तविक शिक्षा नहीं माना है। कबीर जी.....

'पौथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय'

के विचार के पोषक है। उनका प्रेम कोई फिल्मी कहानी का संकुचित प्रेम नही है बल्कि, वे समस्त मानवता और परमात्मा से प्रेम करते है। वे व्यक्ति को व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने वाले माध्यम को शिक्षा मानते है। शिक्षा व्यक्ति के विवेक जागरण का माध्यम है। कबीर जी ने कर्मकांड, रूढ़ियों तथा गलत परम्पराओं में उलझी शिक्षा को मिथ्या शिक्षा (ज्ञान) कहा है। प्रत्येक समाज में समय के साथ ऐसी बहुत सी विकृतियाँ आ जाती हैं जिनसे समाज का मानस खराब हो जाता है। इन त्रुटियों और विकृतियों के परिष्कार का उत्तरदायित्व भी समाज की शिक्षा प्रणाली और उससे जुड़े विचारवेत्ताओं का है। समाज में व्याप्त असमानता, भेदभाव और अन्धविश्वास के परिष्कार कर विद्यार्थियों में परस्पर स्वीकार्यता और बन्धुत्व का भाव जगाने का कार्य शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यही नहीं बल्कि कबीर जी ने शारीरिक और चारित्रिक सुदृढ़ता प्रदान करने वाली शिक्षण प्रक्रिया पर भी बल दिया गया है। चित्त–वृत्तियों के निरोध के लिए कबीर जी ने अपनी साखियों में बार–बार इसका उल्लेख किया है। कबीर जी इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त थे कि मनुष्य जीवन तभी सार्थक और सफल हो सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अथवा विद्यार्थी अपनी चित्त की वृत्ति का न केवल निरोध करे बल्कि अपने जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करने में समर्थ हो सके।

कबीर जी के चिंतन का समाज पर असर अधिक होने का कारण यह भी हैं कि वे लोगों को बताते थे कि हम सभी एक ही मूल से उत्पन्न होते है और हमें एक ही भगवान की शरण लेनी चाहिये उन्हानें समझाया कि धर्म केवल एक पथ तक सीमित नही हो सकता, बल्कि सभी धर्म एक ही जगह से उत्पन्न होते है। इस प्रकार उनके चिंतन का समाज पर असर सभी तरह के लोगों को प्रभावित करता रहा है। आज भी लोग उनके उपदेशों को अपनाकर जीवन को जीने का नया अंदाज बनाने का प्रयास करते हैं उनकी वाणी इस राष्ट्र की अनमोल धरोहर है और हमें न केवल इस धरोहर को बचाना है बल्कि फैलाना भी है।

निष्कर्षः– अंततः हम कह सकते है कि संतो की वाणी को आत्मसात एवं चिंतन मनन करने से समाज में अमूल–चूल परिवर्तन किया जा सकता है। इसी के साथ एक नव्य स्फूर्ति तथा विश्वशान्ति को प्रसृत कर मानवमूल्य को भी स्थापित किया जा सकता है। इन्होनें अपने साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों को संपोषित किया है। अहिंसा, प्रेम, दया, करूणा, सत्यता आचरण की पवित्रता

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संवेदनशीलता विश्वएकता जैसे पुनीत भावों का सृजन किया संत कबीर शीतल जल भी है और दहकते अंगार भी जो मानवता विरोधी तत्वों को भस्म करने के लिए तैयार रहती है। महात्मा कबीर आज हमारे बीच नही है लेकिन अपनी कालजयी वाणी में वे युगो–युगो तक हमारे सामने परिलक्षित होते रहेगे। उनकी वाणी का अनुसरण करके हम अपना वर्तमान ही नही भविष्य और मृत्यु बाद के काल को भी संवार सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– रवींद्र कुमार सिंह, संत–काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, वाणी प्रकाशन, आवृत्ति संस्करण, 2015, पृ0 38

2– परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की संत परम्परा, लोकभारती प्रकाशन, संस्करणः 2009, पृ0 7

3– शुकदेव सिंह, भये कबीर कबीर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2005, पृ0 311

4– बलदेव वंशी, कबीर की चिंता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृ0 9